

# बेल के प्रमेय को यथासंभव सरलतम तरीके से समझना

प्रोफ़ेसर

**गुरुप्रसाद कर**

भौतिकी एवं अनुप्रयुक्त गणित यूनिट  
भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कोलकाता



## कार्यक्रम का स्थान सारांश

पामु सेमिनार कक्ष

ए एन कोलमोगोरोव बिल्डिंग,  
आईएसआई, कोलकाता

## दिनांक समय

30 अगस्त, 2023  
03:00 PM



इस वर्ष जिन प्रायोगिक कार्यों पर नोबेल पुरस्कार दिए गए हैं उनमें 1964 में जॉन एस. बेल की गहन खोज शामिल है। यह बेल के प्रमेय के नाम से प्रसिद्ध है और कुछ भौतिकविदों द्वारा इसे 'विज्ञान की सबसे गहन खोज' माना गया है। बेल प्रमेय से पता चलता है कि क्वांटम दुनिया ईपीआर विरोधाभास के रूप में प्रसिद्ध कार्य में आइंस्टीन द्वारा प्रतिपादित स्थानीय-यथार्थवाद की जुड़वां अवधारणाओं के साथ संगत नहीं है। विभिन्न प्रयोग यह स्थापित करते हैं कि प्रकृति वास्तव में स्थानीय-यथार्थवाद के साथ असंगत है। इस वार्ता में हम बेल के प्रमेय की खोज से संबंधित मुद्दों पर यथासंभव सरलतम तरीके से चर्चा करेंगे। विशेष रूप से, बेल प्रमेय के सार को समझने के लिए क्वांटम यांत्रिकी में किसी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होगी।

भाग लेने हेतु प्रत्येक  
व्यक्ति आमंत्रित है